सरदार वल्लभ भाई राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद में भारतीय पुलिस सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों की दीक्षांत परेड समारोह के अवसर पर माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का उद्बोधन

.....

निदेशक, सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, श्रीमती अरूणा बहुगुणा, अकादमी के भूतपूर्व निदेशकगण, उपस्थिति थ्वतमपहद क्पहदपजंतपमेए राज्य पुलिस व केन्द्रीय पुलिस संगठनों के प्रमुख, आंध्र प्रदेश पुलिस के अधिकारीगण, प्रतिष्ठित अतिथिगण, अकादमी के प्रशिक्षक एवं अन्य सदस्यगण, मेरे प्रशिक्षु अधिकारी, उनके अभिभावक एवं पत्रकार मित्रों तथा भाईयों व बहनों -

- मुझे भारतीय पुलिस सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों के **67वें दीक्षांत समारोह** के अवसर पर उपस्थित होकर अत्यन्त सुखद अनुभव हो रहा है। मैं सर्वप्रथम **128 भारतीय** व **15 मित्र दे-नों** के सभी प्रशिक्षु अधिकारियों को बधाई देता हूं। आपने कठिन परिश्रम कर योग्यता के आधार पर पहले संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में सफलता हासिल की और अब महीनों के प्रशिक्षण के बाद आप पुलिस अधिकारी के रूप में अपने कर्त्तव्य के निर्वहन के लिए तैयार हैं। मैं आपके चेहरों के भाव को देख रहा हूं। उसमें संकल्प भी है, तत्परता भी है, खुशी भी है और एक सपना भी है। परीक्षा में उत्तीर्ण होना आपकी अपनी आकांक्षा थी परन्तु अब आप देश की आकांक्षा बन गए हैं। मैं यहां उपस्थित आपके माता-पिता और परिजनों का भी हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

- यह सौभाग्य की बात है कि यह दीक्षांत परेड समारोह **लौह पुरूष** और **भारत के पहले गृहमंत्री सरदार पटेल** के जन्मदिवस पर हो रहा है। सरदार पटेल के **कर्तव्य व व्यक्तित्व** ने उन्हें व्यक्ति से एक विचार बना दिया। जिस पथ पर वह चलते रहे, चलते-चलते वे स्वयं पथ बन गये। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं कि स्वतंत्रता के बाद देश चुनौतियों से घिरा हुआ था। सबसे बड़ी चुनौती भारत में **रियासतों के विलय** की थी। पूरे विश्व की नजर भारत की ओर थी। दुनिया के अनेक राष्ट्रों को इस समस्या का सामना करना पड़ा और उनका रक्त-रंजित इतिहास रहा है। लेकिन सरदार पटेल ने **562 रियासतों** को **डपदपउनउ टपवसमदबम** और **डंगपउनउ ॅपससपदहदमे** के आधार पर दो महीनों के भीतर ही भारत में विलय करा लिया। इसलिए लोग उन्हें **भारत का बिस्मॉर्क** कहते हैं। परन्तु मैं इस तुलना को अनुचित मानता हूं।

- सरदार पटेल का व्यक्तित्व लोकतांत्रिक था और वे **चट्टान की तरह फौलादी व्यक्तित्व** के धनी थे। उन्होंने **रक्तहीन क्रांति** के द्वारा **विखंडित मानसिकता** से देश को मुक्त किया और **राष्ट्रीय एकता की स्थापना** की। ब्रिटिश साम्राज्य के अंतिम **गृहसचिव ए.ई. पोर्टर** को **19 दिसम्बर, 1947** को लिखे पत्र में जो उन्होंने कहा, वह इस रक्तहीन क्रांति के दर्पण के समान हैं- **"हां, बहुत सी घटनायें- कुछ लगभग प्रलयकारी वेग से- आपके भारत छोड़ने के बाद घटी हैं परन्तु ईश्वर की कृपा से हम इस भयंकर तूफान से पार हो गए हैं और परिस्थिति को हमने बदल दिया है।"** अतः विश्व इतिहास में सरदार पटेल अनुपम और अद्वितीय उदाहरण हैं। सिर्फ वर्तमान ही नहीं बल्कि आने वाली अनेक पीढ़ियों को उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा मिलती रहेगी।

- हमारी सरकार ने आज के दिन को **"राष्ट्रीय एकता दिवस"** के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। यह सिर्फ प्रतीकात्मक नहीं है। सरदार पटेल को जानने का मतलब राष्ट्र निर्माण

की प्रक्रिया को समझना है। जूनागढ़, हैदराबाद जैसे रियासत कैसे भारत में विलीन हुए ये रोचक प्रसंग है। इसी दिन आप अपना प्रशिक्षण पूरा कर देश सेवा के लिए संकल्प और सपना लेकर पुलिस सेवा में प्रवेश कर रहे हैं। मैं आपके सार्थक प्रयास और सफल जीवन के लिए शुभकामनाएं देता हूं। **आपकी प्राथमिकता क्या है?** इस प्रश्न का उत्तर सरदार पटेल ने पोर्टर को लिखे उसी पत्र में इन शब्दों में दिया था **"जनसेवा के लिए अपने अन्य कर्त्तव्यों का त्याग करके जनता की सेवा करना ही हमारा धर्म है और उसके आत्म-त्याग तथा पवित्र कर्त्तव्य पालन में ही उसकी योग्यता समायी हुई है।"**

- इस अकादमी ने अपनी स्थापना के बाद से लगातार प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मैं अकादमी के अधिकारियों व प्रबंधकों को इस बात की बधाई देना चाहता हूं कि आप **समय और संदर्भ के अनुसार** प्रशिक्षण के तौर-तरीकों एवं पाठ्यक्रमों में परिवर्तन करते रहे हैं। यह आपकी रचनात्मक सोच को दर्शाता है। मुझे मालूम है कि देश की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को आपने प्रशिक्षण कार्यों से जोड़ा है। लेकिन आपकी चुनौतियां दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इसका कारण है साधारणतः पुलिस का कार्य परम्परागत अपराधों को रोकने का रहा है परन्तु पुलिस की भूमिका हमेशा एक जैसी नहीं रहती है। औद्योगिक क्रांति से पहले **पुलिस की भूमिका** जो थी वह औद्योगिक क्रांति के बाद बदल गई। लगभग ढाई सौ सालों तक पुलिस अपनी परम्परागत भूमिका में ही रही है। परन्तु सूचना क्रांति से जहां पूरा विश्व अनेक तरह से लाभान्वित हुआ है वहीं इसके नकारात्मक प्रभाव भी हैं।

- हमें मालूम है कि समुद्र मंथन से अमृत और विष दोनों निकलता है। इसी तरह कम्प्यूटर, इंटरनेट और मोबाईल के आगमन से विषरूपी **ब्लइमत ब्तपउम** का भी जन्म हुआ है। जहां परम्परागत अपराध का असर स्थानीय स्तर पर होता था वहीं **ब्लइमत ब्तपउम** का असर **ळसवइंस** स्तर पर होता है। इसने हमारी चुनौतियों को बढ़ा दिया है। **ब्लइमत**

ब्तपउम 2013-14 के आंकड़ों के अनुसार यह 50 प्रति-ात वार्षिक दर से बढ़ रहा है तथा महाराष्ट्र, उत्तर प्रदे-ा और आंध्र प्रदे-ा इसमें अग्रणी हैं। जबकि उत्तर-पूर्व राज्यों में ये न के बराबर है। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि **रोमानिया** में एक शहर है **रोमानिकू वेल्च़ा,** जिसको भ्ंबामत टपससंहम के नाम से जानते हैं। कोई जरूरी नहीं है कि ब्लइमत ब्तपउम करने वाला व्यक्ति आपके शहर या आपके देश का हो।

- गृह मंत्रालय इस अपराध को रोकने के लिए सभी सार्थक कदम उठा रहा है और हम जल्द ही ब्लइमत ब्तपउम च्तमअमदजपवद ैजतंजमहल को और भी मजबूत करेंगे। हमें खुशी है कि अकादमी अपने प्रशिक्षण में अपराध के बदलते स्वरूप को चिन्हित करने और वैसा ही प्रशिक्षण देने में कामयाब है। आपका पाठ्यक्रम **श्ब्वदजपदनपजल ूपजी बींदहमश** को दर्शाता है।

- आज मुझे **128 भारतीय** प्रशिक्षु अधिकारियों के बीच **28 महिला** प्रशिक्षु अधिकारियों को देखकर सुखद अनुभूति हो रही है। जहां तक मुझे याद है **80 के द-क** में दूरदर्शन पर एक सीरियल आया करता था जिसका नाम था **'उड़ान'**। इसमें एक महिला पात्र **कल्याणी** का पुलिस अधिकारी बनने और साहसिक काम करने के संकल्प को दिखाया गया था। इस कारण से यह सीरियल लोकप्रिय हुआ था।

- अब परिस्थितियां बदल गई हैं। किसी महिला का पुलिस अधिकारी बनना कौतूहल का विषय नहीं है। मैं इन महिला प्रशिक्षु अधिकारियों को विशेष रूप से बधाई देता हूं। ये पुरूषों की तुलना में अधिक कठिनाईयों का सामना कर यहां तक पहुंची हैं। परन्तु यह तथ्य मेरे हर्श को कम करता है कि यह संख्या मात्र **21 प्रतिशत** है। **इस 21 प्रतिशत को**

51 प्रतिशत की 'उड़ान' भरनी है। देश में महिलाओं के साथ अपराध रोकने में व महिला पीड़िता के दुःख-दर्द को समझने में आपकी अहम भूमिका होगी।

- पुलिस, राज्य का सबसे अधिक **टपेपइसम व्तहंद** होता है। भारत सरकार के सबसे बड़े अधिकारी को भी अपना परिचय देना पड़ता है, लेकिन पुलिस के वर्दीधारी को परिचय देने की आवश्यकता नहीं पड़ती। एक छोटा बच्चा भी स्वयं ही आपका परिचय जान जाता है। यह एक असाधारण विशेषता है। जो आपके दायित्व, कर्त्तव्य और पहुंच को भी असाधारण तरीके से बढ़ा देता है।

- आपसे किसी पीड़ित व्यक्ति का सबसे सशक्त और त्वरित सहारा बनने की अपेक्षा रहती है। हम सबको सोचना होगा कि इस अपेक्षा पर हम कितना खरे उतरते हैं? मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि **पुलिस समाज में बदलाव का सबसे सार्थक माध्यम बन सकती है।** आप जिस सेवा में जा रहे हैं उसकी शुरूआत औपनिवेशिक शासनकाल में हुई थी। तब इसका नाम ैनचमतपवत च्वसपबम ैमतअपबम था जिसे बाद में प्दकपंद ;प्उचमतपंसद्ध च्वसपबम का नाम दिया गया। उस वक्त पुलिस की भूमिका साम्राज्य के हितों का संरक्षण था। इसीलिए इसकी ताकत का उपयोग करना उसकी छवि के साथ जुड़ गया। उस वक्त पुलिस का रूप डरावना होता था। संवेदनहीनता, उसकी प्रकृति और प्रशिक्षण में ःामिल था। ब्रिटिश सरकार ने भारत की पुलिस पर **दूसरा पुलिस आयोग** बनाया था जिसकी रिपोर्ट **1902** में आयी। इसने पुलिस को बर्बर, असभ्य, जंगली व्यवहार करने वाला और भ्रष्ट बताया। परिणाम स्वरूप सरकार ने इस रिपोर्ट को दबा दिया।

- आजादी के बाद पुलिस सेवा में हमने गुणात्मक परिवर्तन किये। इसका कारण है आप स्वतंत्र देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत कार्यरत हैं।

- आप एक लोकतांत्रिक संविधान के अंतर्गत काम करते हैं। आपकी प्राथमिकता संवैधानिक प्रावधानों और मूल्यों के अनुरूप काम करना है। इसीलिए आप जनता के बीच और जनता के लिए काम करते हैं। एक पुलिस अधिकारी से अपेक्षा होती है कि वह अपने दायित्व निर्वहन में किसी भी संकीर्ण भावना से ऊपर उठकर काम करे। तभी आपकी वर्दी की चमक बढ़ती है। आप उदाहरण बन जाते हैं। आप सभी जो प्रशिक्षण प्राप्त कर थ्पमसक में जा रहे हैं, आपसे उम्मीद है कि आप अपने व्यवहार और कर्त्तव्य-परायणता से सुदूर बस्ती में बैठे अशिक्षित, असहाय और हाशिये पर जो लोग हैं उनके बीच आशा की किरण बनकर पहुंचेंगे।

- भारत में पुलिस की चुनौतियां कई अर्थों में दूसरे देशों की अपेक्षा भिन्न है। उसका कारण है हमारा देश **विविधताओं का देश** है। **बोली, भाषा, सम्प्रदाय, जीवन पद्धतियां और परम्पराओं** से विभूषित यह देश पुण्यभूमि है। यह पुण्यभूमि हमारे लिए **कर्मभूमि** भी है। **2011 की जनगणना में 1,635 मातृभाषा** को चिन्हित किया गया था। इसमें आश्चर्य नहीं होगा कि अकेले छवतजी.म्ंज में **220 प्रकार की बोलियां** हैं। इसीलिए पुलिस का फर्ज बनता है कि वह अपने **सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पर्यावरण** को भली-भांति समझे। स्थान बदलते ही लोगों की प्रकृति बदल जाती है। अलग-अलग समुदायों की प्रकृति में भी भिन्नता होती है। आप इसे जितना समझेंगे आपका काम उतना ही आसान होगा। इसलिए मैं मानता हूं कि भारत का पुलिस अधिकारी सिर्फ सूं दंक व्तकमत बनाये रखने में च्वूमत से कहीं अधिक अपने **ैवबपंस व च्ेलबीवसवहपबंस** गुणों का उपयोग करता है।

- सामाजिक सरोकारों के बिना कोई भी दायित्व अपूर्ण रहता है। सामाजिक सरोकार आपको संवेदनशील बनाते हैं और आप घटनाओं को बारीकी से समझकर उसकी जड़ तक पहुंचते हैं। यह आपको स्थायी समाधान की ओर ले जाता है। मेरा मानना है कि पुलिस को **थ्नजनतपेजपब** होना चाहिए। आप सभी घटनाओं का अंदाजा नहीं लगा सकते हैं परन्तु यदि आप **थ्नजनतपेजपब** हैं तो बड़ी संख्या में घटनाओं को अंकुरित होने से पहले ही समाप्त कर सकते हैं। यह सिर्फ **ब्तपउम बैंतज** को ही कम नहीं करता है बल्कि समाज को राहत देने का भी काम करता है और इसे विध्वंस से बचाता है। ऐसी छवि वाले पुलिस अधिकारियों के नाम एवं उपस्थिति मात्र से किसी स्थान पर सकारात्मक परिवर्तन होने लगता है।

- आपको अपने व्यक्तित्व में **भ्ंर्सि जममस** और **भ्ंर्सि ग** होना चाहिए। जहां आवश्यकता पड़े वहां सख्त बनना चाहिए और जहां आवश्यकता हो वहां संवेदनशील रहना चाहिए। अपना कार्य करते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि किसी व्यक्ति का सम्मान और मानवाधिकार सवालों के दायरे में न आये। यह तभी सम्भव है जब आप और आपके अंतर्गत काम करने वाले पुलिस एक टीम के रूप में **'एक मन - एक संकल्प'** से काम करे। इसीलिए आपकी भूमिका **एक लीडर** की भी भूमिका है। आपकी लीडरशिप पुलिस डिपॉर्टमेंट के लिए अहम है। आपका उद्देश्य अपने माथे पर **कुमकुम का तिलक** लगवाना होना चाहिए न कि **कलंक का टीका**। मुझे विश्वास है कि आप इसमे सफल होंगे।

- मैं मानता हूं कि एक पुलिस अधिकारी को **म्गचमतपउमदजंस** होना चाहिए। जहां वह काम कर रहा है वहां उसे नए-नए प्रयोग कर समाज में सद्भाव और आत्मविश्वास एवं भ्रातृत्व विकसित कर पायें। समाज की ऊर्जा का उपयोग कर जब आप काम करते हैं तब लोग और पुलिस एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं। इस संदर्भ में ब्वउउनदपजल च्वसपबपदह की सार्थक भूमिका है। ऐसा करने में आप समुदाय के लोगों की मदद लेते

हैं। तब उस समुदाय के बीच स्वभावतः असामाजिक तत्व दरकिनार हो जाते हैं। ब्वउउनदपजल च्वसपबपदह का मतलब है **पुलिस - श्ब्पजप्रमद ूपजी न्दपवितउश** और **नागरिक - श्च्वसपबम ूपजीवनज न्दपवितउश** दोनों की सहभागिता। दुनियाभर में इसके प्रयोग चल रहे हैं। हमें खुशी है कि हमारे देश की पुलिस ने **ब्वउउनदपजल च्वसपबपदह** में अपेक्षाकृत बड़ा कदम बढ़ाया है।

- मैं **पुलिस स्टेशन** को **न्याय का मंदिर - ज्मउचसम व िश्रनेजपबम** मानता हूं। यह तभी सार्थक होगा जब कोई असहाय और दुःखी व्यक्ति भी सहजता से यहां पहुंचे और पुलिस अधिकारी उसके दुःख-दर्द, असुरक्षा की भावना और उस पर हुए जुल्म को सरलता और संवेदना के साथ सुनें, समझें और तत्परता से निदान में लग जायें। इस दिशा में आपकी भूमिका महत्ती है।

- अपराधों के नए-नए आयाम और उसके बढ़ते हुए फलक को देखते हुए **पुलिस प्रशिक्षण और पुलिस व्यवस्था के आधुनिकीकरण** की आवश्यकता है। **1978** में इस दिशा में **धर्मवीर आयोग** का गठन हुआ था। तब से लेकर आज तक अनेक प्रकार की अनुशंसायें आई हैं।

- मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि **पुलिस सुधार एवं आधुनिकीकरण** की दिशा में हमारी सरकार बिना किसी विलम्ब के ठोस कदम उठाएगी। देश में परम्परागत अपराधों के साथ-साथ संगठित अपराध और वैचारिक जामा पहने अपराध से निबटने का बोझ पुलिस बल पर है। ऐसा ही एक वैचारिक जामा पहना हुआ **स्मजि ंपदह म्गजतमउपेउ** है जो देश के 9 राज्यों के 26 जिलों में सक्रिय है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया को ध्वस्त कर, हिंसा का मार्ग अपनाने वाला कोई भी विचार या संगठन अधिक दिनों तक अपना अस्तित्व बनाकर नहीं रख सकता है। ऐसे लोग राष्ट्र की अस्मिता और अस्तित्व दोनों को चुनौती देते हैं। ऐसे

लोगों से निबटने के लिए पुलिस के मनोबल, कार्यक्षमता, कार्य परिस्थिति और उपकरणों में गुणात्मक परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

- राष्ट्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। हमें अपने पुराने ठंहहंहम को उतारकर नई सोच, नई ऊर्जा और नए संकल्प के साथ भारत माता की आराधना करनी है। हम सब अलग-अलग नामों, अलग-अलग दायित्वों एवं अलग-अलग रूपों में एक ही काम कर रहे हैं वह है भारत माता की आराधना। यह त्याग और बलिदान की भूमि रही है। तभी तो पुलिस हो या सेना वे देश के हर भाग में आवश्यकता के अनुसार तन-मन-धन से कर्त्तव्य का निर्वहन करते हैं चाहे उत्तर भारत हो या जम्मू-कश्मीर या फिर उत्तर-पूर्व। लक्ष्य एक ही होता है, देश को सुरक्षित रखना, खुशहाल बनाना और सद्भाव कायम करना।

- मैं, अन्त में **सरदार पटेल** की उस उक्ति के साथ अपना उद्बोधन समाप्त करता हूं जिसे उन्होंने बड़ौदा के अल्पकालीन लोकतांत्रिक शासन का उद्घाटन करते हुए कहा था-

"स्वाधीनता प्राप्त करना हमारे लिए अपेक्षाकृत आसान रहा है, पर आपको इस स्वाधीनता के योग्य सिद्ध करना कहीं ज्यादा कठिन होगा। यह स्वाधीनता निरर्थक होगी यदि इसका परिणाम देश की आम जनता की गरीबी और बीमारी दूर होने में नहीं आया, हमारे चरित्र के विकास और उन्नति में नहीं आया, नागरिक उत्तरदायित्व की विकसित भावना में नहीं आया तथा सार्वजनिक आचरणों को ऊंचा उठाने के रूप में नहीं आया।"

मैं अकादमी को इसकी नई ऊंचाईयों के लिए बधाई देता हूं और प्रशिक्षु अधिकारियों को उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

जय हिन्द! जय भारत माता!